ISSN: 2393-
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in July 2025

ऋतुराज के काव्य में मानवीय संवेदना और हाशिए का समाज

नरेन्द्र कुमार, शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर E-mail - dhakshmanyadav2014@gmail.com
डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन, शोध निर्देशक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर ऋतुराज के काव्य में निहित मानवीय संवेदना और हाशिए के समाज के चित्रण का एक गहन और विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और इक्कीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में सक्रिय ऋतुराज की कविताएँ केवल शब्दों का जाल नहीं हैं, बल्कि वे उस समाज का जीवंत दस्तावेज हैं, जिसे मुख्यधारा के विमर्श से जानबूझकर या अनजाने में बाहर रखा गया है। उनकी कविताओं में शोषित, वंचित, निर्बल, स्त्री, और साधारण आम आदमी की पीड़ा को अत्यंत सूक्ष्मता और गहरी अंतरंगता के साथ उकेरा गया है। ऋतुराज की कविता का मुख्य स्वर जनवादी है, जो किसी भी प्रकार के 'वाद' से परे जाकर, सीधे-सीधे मनुष्यता के पक्ष में खड़ा होता है। वे समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की चिंताओं, उसकी विडंबनापूर्ण नियति और जीवन के छोटे-छोटे संघर्षों को कविता का केंद्र बनाते हैं। यह शोध पत्र उनकी रचनाधर्मिता के दो अनिवार्य पहलुओं अत्यधिक विस्तृत मानवीय संवेदना और उस संवेदना से उपजा हाशिए के समाज का तीक्ष्ण यथार्थवादी चित्रण पर केंद्रित है।

की-वर्ड - मानवीय संवेदना, हाशिए का समाज, जनवादी, स्त्री-विमर्श, विडंबना, सत्ता, मज़दूर, यथार्थ, सामाजिक प्रतिबद्धता।

शोध पत्र का मुख्य भाग -

1. भूमिका और सामाजिक संदर्भ -

कवि ऋतुराज ने अपने समय और समाज की विसंगतियों को अत्यंत प्रखरता और साफगोई से व्यक्त किया है। उनकी कविता उस समय की उपज है जब एक ओर नव-उदारवाद और वैश्वीकरण ने भारतीय समाज के ताने-बाने को बदल दिया था, वहीं दूसरी ओर सत्ता और पूँजी का केंद्रीकरण लगातार बढ़ता जा रहा था। इस दौर में, एक बड़ा वर्ग सुविधाओं और विकास की मुख्यधारा से कटकर, और अधिक हाशिए पर धकेल दिया गया। ऋतुराज की कविता का मुख्य स्वर इन्हीं 'हाशिए के समाज' की समस्याओं को स्वर देना है। वे उन लोगों के कवि हैं जो कठोर व्यवस्था की मार झेल रहे हैं, जो जीवन की दौड़ में गुमनाम हो गए हैं और जिनकी आवाज़ सत्ता के गलियारों में दब कर रह गई है। उनकी कविताओं में मानवीय संवेदना का अर्थ केवल सतही सहानुभूति नहीं, बल्कि उस पीड़ा के साथ आत्मिक एकाकार होना है, उस दुख को भीतर तक महसूस करना है।

2. ऋतुराज के काव्य में मानवीय संवेदना का स्वरूप -

ऋतुराज के काव्य में मानवीय संवेदना अत्यंत गहरी, व्यापक और बहुआयामी है। उनकी संवेदना किसी एक विशेष वर्ग, लिंग या जाति तक सीमित न रहकर संपूर्ण मानवता को अपने आगोश में लेती है। वे जीवन के छोटे-छोटे प्रसंगों, साधारण पात्रों और रोजमर्रा की घटनाओं के माध्यम से जीवन के बड़े सत्यों और दार्शनिक आयामों को उद्‌घाटित करते हैं।

वेदना की अंतरंगता - ऋतुराज की संवेदना केवल बाहरी दुख या भौतिक अभाव तक सीमित नहीं है, बल्कि वे मनुष्य के भीतर की मानसिक टूट-फूट, निराशा और अकेलेपन को भी पहचानते हैं। यह टूटन उस रचनाकार की भी हो सकती है, जो संसार की पीड़ा को ढोते-ढोते स्वयं थक जाता है। उनकी कविता 'थक कर रुक जाना' में यह भाव अत्यंत मार्मिकता से व्यक्त हुआ है -

"कविता के ठहरने की वजह
मेरी थकान थी
मेरे अटूट स्वेद प्रवाह...
मेरे गिरने की क्रिया से पहले
विनम्र पड़ाव की वह रात"

यह पंक्तियाँ न केवल एक रचनाकार की सीमाओं को स्वीकार करती हैं, बल्कि मानवीय दुर्बलताओं के प्रति गहरी सहानुभूति और स्वीकार का भाव भी रखती हैं। यह दर्शाता है कि कवि अपनी व्यक्तिगत पीड़ा को भी व्यापक मानवीय संवेदना से जोड़कर देखता है।

प्रकृति और मनुष्य का एकीकरण - ऋतुराज के यहाँ प्रकृति भी मानवीय संवेदना का एक अभिन्न हिस्सा है। वे जड़ और चेतन के बीच की दूरी को मिटाते हुए, प्रकृति को भी मनुष्य की तरह संघर्षरत और संवेदनशील मानते हैं। 'पेड़' कविता में वे पेड़ को एक जीवित इकाई के रूप में देखते हैं जो मनुष्य की नियति से जुड़ा हुआ है-

"जिन लोगों ने पेड़ लगाये थे

उनसे पूछो
पहले कौन मुरझाया ?
निस्संदेह वह आदमी ही रहा होगा।"

यहां पेड़ और मनुष्य की नियति को एक-दूसरे से जोड़कर कवि ने संवेदना का एक नया धरातल तैयार किया है। पेड़ का मुरझाना केवल वनस्पति का अंत नहीं है, बल्कि मनुष्य के जीवन-संघर्ष की हार और थकान का भी प्रतीक है। यह एक सूक्ष्म बिम्ब है जो प्राकृतिक और मानवीय दुनिया को एक ही संवेदनात्मक डोर से बाँधता है।

3. हाशिए के समाज का विस्तृत चित्रण -

हाशिए का समाज वह वर्ग है जो संरचनात्मक रूप से आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से पिछड़ा हुआ है। यह वह अदृश्य और उपेक्षित समूह है जिसे सत्ता और सुविधाएँ अक्सर भुला देती हैं। ऋतुराज ने अपनी कविताओं में इस वर्ग को मात्र 'पीड़ित' के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील नायकत्व के साथ प्रस्तुत किया है।

मज़दूर की विडंबना और श्रम की कीमत - ऋतुराज की कविता 'हाथ' मज़दूरों की विडंबनापूर्ण और करुण स्थिति को दर्शाती है। यह कविता पूँजीवादी व्यवस्था के उस क्रूर चेहरे को उजागर करती है जहाँ मनुष्य का मूल्य केवल उसके श्रम तक सीमित है, उसकी मानवीय गरिमा तक नहीं -

"मशीन से एक हाथ कटा हुआ
दूसरा हाथ
मालिक की भैंस को नहलाता
दूध पहुँचाता सुबह शाम"

यह पंक्तियाँ उस क्रूर यथार्थ को बयां करती हैं कि अंग-भंग हो जाने के बाद भी, मज़दूर को विश्राम या क्षतिपूर्ति नहीं मिलती। उसका एक हाथ कट जाने के बाद भी वह व्यवस्था का गुलाम बना रहता है, अपने शेष श्रम को मालिक की सेवा में लगाता है। यह हाशिए के समाज की वह अनिवार्य नियति है, जिसे ऋतुराज ने अत्यंत तीक्ष्णता से पकड़ा है।

शहरी विसंगति और छोटे व्यवसायी का दमन - 'खोखा' कविता शहरी जीवन की उस विडंबना को उजागर करती है जहाँ गरीब आदमी का छोटा सा रोज़गार, उसकी जीवन-रेखा, भी सत्ता और नियम की आँखों में खटकता है। कवि यह प्रश्न उठाता है कि आखिर शहर का सौंदर्यबोध और उसकी व्यवस्था किसके विनाश पर टिकी है -

"जब उन्होंने उसकी दुकान को उन्होंने लूटा
वे नियम को पोस रहे थे
जब उन्होंने उसे लाठियों से पीटा
वे नियम को भरपेट खिला रहे थे"

यहाँ 'नियम' और 'कानून' हाशिए के समाज के लिए दमन और शोषण के औज़ार बन जाते हैं। यह कविता उस ढोंगी और दोगले समाज पर करारा प्रहार है जो एक ओर व्यवस्था की दुहाई देता है, और दूसरी ओर गरीबों के पेट पर लात मारता है।

4. स्त्री-विमर्श और सत्ता का चरित्र -

स्त्री की स्थिति समाज में अक्सर हाशिए पर ही रहती है, और ऋतुराज ने उसकी इस पीड़ा को भी आवाज़ दी है। 'औरत और खाट' कविता में वे लिखते हैं:

"एक मरती हुई औरत है
जिसकी हल्की आहट
खाट पर सोये आदमी की नींद में आती रहेगी"

यहाँ स्त्री की मृत्यु भी एक 'हल्की आहट' बनकर रह जाती है, जिसे पुरुष-प्रधान समाज का ध्यान भंग करने की भी शक्ति नहीं है। यह स्त्री के अस्तित्व की उपेक्षा और उसकी पीड़ा की अदृश्यता को दर्शाता है। उसकी वेदना को इतनी कम जगह दी गई है कि वह केवल एक 'आहट' बनकर रह जाती है, जिसके कारण मुख्यधारा के समाज की नींद भी पूरी तरह नहीं टूटती।

ऋतुराज की कविता 'कन्यादान' स्त्री-विमर्श के क्षेत्र में एक मील का पत्थर मानी जाती है। यह कविता पारंपरिक आदर्शों और रीति-रिवाजों का विरोध करती है। इसमें एक माँ अपनी बेटी को विवाह के समय जो सीख देती है, वह रूढ़िवादी अपेक्षाओं से पूरी तरह भिन्न है। माँ अपनी बेटी से कहती है:

"लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।"

यह पंक्ति स्त्री के उस 'आदर्श' रूप का विरोध करती है, जिसे समाज ने 'कोमलता' के नाम पर 'कमज़ोरी' और

ISSN: 2393-
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in July 2025

'सीधापन' के नाम पर 'सरलता' बना दिया है, जिसका फायदा उठाया जा सके। ऋतुराज यहाँ स्त्री को अपनी अस्मिता और शक्ति को पहचानने का संदेश देते हैं। वे कोमलता के गौरव में छिपे उपहास को उजागर करते हैं और स्त्री को एक यथार्थवादी और सशक्त व्यक्तित्व धारण करने की प्रेरणा देते हैं। यह कविता स्त्री को मानक सामाजिक भूमिकाओं से बाहर निकलने और अपनी पहचान को स्वयं गढ़ने का आह्वान करती है।

5. अभावग्रस्त जीवन की चेतना -

ऋतुराज मनुष्य की पीड़ा को केवल बाहर से नहीं देखते, बल्कि उसके भीतर उतरकर उसे महसूस करते हैं। उनकी कविता 'ग़रीब लोग' अभावग्रस्त जीवन की संवेदना और विवशता का उत्कृष्ट उदाहरण है। वे लिखते हैं -

"ग़रीब लोगों की आँखों में दूरबीन लगी होती है
वे दूर से ही देख लेते हैं
कच्चे-पक्के जामुन, खजूर, खिरनियाँ,
उन्हें दूर से ही पता चल जाता है
कहाँ हैं सूखी लकड़ियाँ, गोबर"

यहाँ 'दूरबीन' का बिम्ब अत्यंत शक्तिशाली है। यह अभावग्रस्त जीवन की उस विवशता को दर्शाता है, जहाँ पेट की भूख मनुष्य की दृष्टि को अत्यधिक पैना कर देती है। उनकी दृष्टि 'दूरबीन' की तरह इसलिए है, क्योंकि उन्हें अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए, उन छोटी-छोटी चीज़ों को दूर से ही पहचानना पड़ता है, जो उनके जीवन-यापन के लिए आवश्यक हैं। यह दृष्टि कोई वरदान नहीं, बल्कि अभाव से जन्मा एक कौशल है।

ऋतुराज की संवेदना केवल दुख व्यक्त करने तक सीमित नहीं है, वे उस श्रम का सम्मान करते हैं जिससे यह दुनिया चलती है। वे मानते हैं कि ग़रीबों के पसीने से ही दुनिया के सारे रंग बनते हैं, और उनका श्रम, उनका संघर्ष ही दुनिया का वास्तविक आधार है।

6. सत्ता और व्यवस्था पर व्यंग्य -

ऋतुराज की कविताएँ सत्ता के भ्रष्ट चरित्र को उजागर करती हैं। वे दिखाते हैं कि किस प्रकार सत्ता और व्यवस्था आम आदमी के खिलाफ खड़ी है। 'शांतिपाठ' जैसी कविताओं में वे व्यंग्य के माध्यम से सत्ता की क्रूरता पर प्रहार करते हैं, विशेषकर जब धर्म और आस्था का उपयोग शोषण के लिए किया जाता है:

"ईश्वर तुम्हारी जेब में... कल्याण हो
ईश्वर तिजोरी की ठंडी... कल्याण हो"

यह तीखा व्यंग्य उस व्यवस्था पर है जो धर्म और ईश्वर के नाम पर भी पूँजी और शोषण को बढ़ावा देती है। यह दर्शाता है कि सत्ता और पूँजीपति वर्ग ने किस प्रकार धार्मिक भावनाओं को भी अपने हितों के लिए हथियार बना लिया है।

7. टूटे विश्वास की कहानी:

'मैं उस आदमी को जानता हूँ' कविता में समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की लाचारी, निराशा और उनके टूटे हुए विश्वास को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। यह कविता उन लोगों के मन की स्थिति को दर्शाती है, जिनका भरोसा जीवन, समाज और यहाँ तक कि ईश्वर से भी उठ चुका है:

"मैं उस आदमी को जानता हूँ
नित्य नई आशा में
वह बिछाता है अपनी चादर
फटे चीकट दुशाले को ओढ़कर सर्दी में
कहता है
अगर ईश्वर कहीं होता तो हमारी मदद करता
किस देवता को पूजूँ
एक के लिए तो अगरबत्ती नहीं जुटा सका
दूसरे के बारे में क्यों सोचूँ
सब ठीक हो जाएगा
क्योंकि इससे बुरा तो अब क्या होगा"

यह उद्धरण एक ऐसी मानसिकता को दर्शाता है जो संघर्ष करते-करते थक चुकी है। 'नित्य नई आशा' में चादर बिछाना और फिर भी ईश्वर में विश्वास खोना, हाशिए पर धकेले गए मनुष्य की अंतिम निराशा को चित्रित करता है। अंतिम पंक्ति, "सब ठीक हो जाएगा, क्योंकि इससे बुरा तो अब क्या होगा", में निराशा की वह चरम सीमा है जो एक अजीब तरह की स्वीकारोक्ति में बदल जाती है एक ऐसा यथार्थ जहां भविष्य की एकमात्र गारंटी यह है कि वर्तमान

से बुरा नहीं हो सकता। यह विडंबना ऋतुराज के काव्य की केंद्रीय विशेषता है।

निष्कर्ष -

ऋतुराज समकालीन हिंदी कविता के वे विरल हस्ताक्षर हैं जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से हाशिए के समाज को न केवल एक नई पहचान दी है, बल्कि उन्हें मानवीय गरिमा भी प्रदान की है। उनकी मानवीय संवेदना केवल भावुकता या क्षणिक दया नहीं है, बल्कि वह एक गहरी, अखंड और सामाजिक प्रतिबद्धता है, जो उनके संपूर्ण काव्य में व्याप्त है।

उन्होंने समाज की विसंगतियों पर सीधा आरोप लगाने के बजाय, विडंबनाओं और सूक्ष्म चित्रण के माध्यम से अपनी बात कही है। उनकी भाषा सीधी, संप्रेषणीय और यथार्थ के धरातल पर टिकी हुई है, जिसमें कोई अनावश्यक आदर्शवाद नहीं है। उन्होंने अपनी कविताओं में उन लोगों के लिए जगह बनाई है जिन्हें समाज ने भुला दिया था, जिनके दुख को तुच्छ मान लिया गया था।

ऋतुराज की कविता हमें सिखाती है कि साहित्य का असली धर्म मनुष्यता के पक्ष में खड़ा होना है, अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना है, और समाज के सबसे कमजोर तबके के साथ एकजुटता महसूस करना है। आज के दौर में जब बाज़ारवाद और उपभोक्तावाद ने मानवीय संवेदनाओं को लगातार हाशिए पर धकेल दिया है, तब ऋतुराज की कविताएँ और भी अधिक प्रासंगिक हो गई हैं। वे हमें बार-बार यह याद दिलाती हैं कि मनुष्यता का असली अर्थ केवल अपना भला सोचना नहीं है, बल्कि दूसरों के दुःख में शामिल होना और अन्याय के खिलाफ संघर्ष करना है। उनका काव्य इस बात का प्रमाण है कि जनवादी चेतना से युक्त कविता न केवल समय की समस्याओं को उजागर करती है, बल्कि भविष्य के लिए मानवीय मूल्यों की स्थापना भी करती है।

संदर्भ सूची -

1. एक मरणधर्मा और अन्य, 1967, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर।
2. पुल पर पानी, 1981, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. नहीं प्रबोध चन्द्रोदय, 1984, धरती प्रकाशन, बीकानेर।
4. सुरत निरत, 1987, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
5. आशा नाम नदी, 2007, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. कवि ने कहा, 2008, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली ।
7. स्त्रीवग्ग, 2013, बोधि प्रकाशन, जयपुर ।
8. हम उत्तर मुक्तिबोध हैं, 2019, कलमकार मंच जयपुर ।
9. कविता के नए प्रतिमान 1968, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. हिन्दी साहित्य की जनवादी परम्परा प्रकाशन, 1953, प्रकाश चन्द्र शुक्ल, किताब महल, इलाहाबाद।
11. प्रगति और परंपरा, 1949, डॉ. रामविलास शर्मा, किताब महल, इलाहबाद।
12. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, 2010, समकालीन हिंदी कविता, राजकमल प्रकाशन।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY